प्र मा ण प त्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबन्ध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए ।

१ जून, १९९५ ।

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर ।

डॉ.पी.एस.पाटील,
एम.ए.,पीएच.डी.
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर ४१६ ००४ ।

प्र मा ण प त्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री सुनिल बापू बनसोडे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध " देवेश ठाकुर के प्रिय शबनम " उपन्यास का अनुशीलन " मेरे निर्देशन में सफलता-पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है । यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है । श्री सुनिल बापू बनसोडे के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

(डॉ.पी.एस.पाटील)
शोध-निर्देशक

कोल्हापुर ।
दिनांक : १ : ६ :१९९५ ।

प्रख्यापन

यह लघु-शोध प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल.के लघु शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर।

दिनांक : ३ : ६ : १९९५।

(श्री सुनिल बापू बनसोडे)

शोध-छात्र

प्राक्कथन

प्राक्कथन

‘ उपन्यास’ आधुनिक गद्य की सर्वाधिक सशक्त और लोकप्रिय विधा है। एक प्रधान कथा एवं अनेक प्रासंगिक कथाओं, पात्रों और देशकाल योजना द्वारा घटना-संगठन के आधारपर सम्पूर्ण जीवन के प्रतिस्थापित रूप उपन्यास में चित्रित मिलते हैं। यहाँ स्पष्ट है कि जीवन की विविध घटनाओं को ही मनुष्य के सामने रखना अर्थात व्यापक जीवन दर्शन को कलात्मक रूप में मानव जीवन के समक्ष उपन्यास के माध्यम से रखा जाता है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में भारतीय जीवन को यथार्थ तथा व्यापक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ है। समाज के सभी स्तरों को यथार्थ रूप में चित्रित करना वैसे तो आसान काम नहीं है। परन्तु स्वातंत्र्योत्तर काल में साहित्यकारों ने समाज की समस्याओं को यथार्थ रूप में चित्रित करने में सफलता पाई है। ऐसे उपन्यास पढते समय पाठक को लगता है कि अपनी ही आप किसी इसमें चित्रित है। इसी शृंखला में डॉ. देवेश ठाकुर का नाम लिया जा सकता है, जो हिन्दी साहित्य में रचनाधर्मी साहित्यकार और प्रगतिशील समीक्षक में उनका नाम अपना विशेष स्थान रखता है।

प्रेरणा -

एम.फिल. की परीक्षा में उपन्यास विधा विशेष के अध्ययन के समय गोदान, कौंचघर, कब तक पुकारूँ, वैशाली की नगरवधू, अमृत और विष, दिव्या और नदी के द्वीप आदि उपन्यास पढने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। क्लास में पढाने के पहले मैंने सभी उपन्यास पढ डाले। तब मुझे ‘ कौंचघर ’ ने ज्यादातर आकर्षित किया। अत: मैंने निर्णय लिया था कि डॉ. देवेश ठाकुर जी के ही उपन्यासपर लघु शोध एवं शोध कार्य करूँगा। मैंने मेरे श्रद्धेय गुरूवर्य तथा शोध निर्देशक डॉ. पी. एस. पाटील जी से विचार-विमर्श करके लघु शोध-प्रबन्ध के लिए ‘ प्रिय सागम ’ उपन्यास का अनुशीलन ’ इस विषय का चयन किया। प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध के रूप में मेरा वह संकल्प साकार हुआ है।

` प्रिय शबनम ` उपन्यास के अनुसन्धान के प्रारम्भ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न निर्माण हुए थे।

१) ` प्रिय शबनम ` उपन्यास का वस्तु-विन्यास क्या है ?

२) उपन्यास का शीर्षक ` प्रिय शबनम ` लेखक ने क्यों रखा है ?

३) क्या नायक मंगल सही मायने में मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी का प्रतिनिधित्व करता है ?

४) ` प्रिय शबनम ` उपन्यास में लेखक का क्या उद्देश्य रहा है ?

५) ` प्रिय शबनम ` उपन्यास की भाषा-शैली में कौन-सी नवीनता आई है ?

मैंने इन प्रश्नों के उत्तर अनुसन्धान की उपलब्धियों के रूप में उपसंहार में दिए हैं। अध्ययन एवं शोध की सुविधा को दृष्टि से प्रस्तुत विषय को मैंने निम्न अध्यायों में विभाजित किया है --

प्रथम अध्याय : देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रथम अध्याय में मैंने देवेश ठाकुर जी के जीवन परिचय के अन्तर्गत पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, विवाह तथा सन्तान, साहित्य निर्माण एवं पुरस्कार तथा उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। कृतित्व के अन्तर्गत रचनाधर्मी साहित्यकार, प्रगतिशील, समीक्षक, सुदी सम्पादक, बाल साहित्य के प्रणेता, भावुक तथा रोमानी कवि के रूप में डॉ. देवेश जी की साहित्यिक रचनाओं का नाम निर्देश किया है।

द्वितीय अध्याय : ` प्रिय शबनम ` : वास्तु-विन्यास

द्वितीय अध्याय में ` प्रिय शबनम ` की कथावस्तु का अध्यायगत विवरण देकर उसकी विशेषताओं को बताया है। ` प्रिय शबनम ` के कथ्य के बारे में अनेक समीक्षकोंने अपने विचार प्रकट किये हैं। मैंने उपन्यास की कथावस्तु को देकर फिर कथावस्तु की समीक्षा की है। ` प्रिय शबनम ` यह शीर्षक इस उपन्यास कहाँ तक सार्थक है, इसका विवरण ` शिर्षक की सार्थकता ` इस शीर्षक में प्रस्तुत की है।

तृतीय अध्याय : ` प्रिय शबनम ` : चरित्र-चित्रण

इस अध्याय में मैंने उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है। उपन्यास का नायक मंगल के चरित्र की विशेषताओं का विश्लेषण किया है। उपन्यास की नायिका शबनम तथा अन्य महत्त्वपूर्ण पात्रों - लाजो, शम्मूदा तथा मंगल की माँ की चरित्रगत विशेषताओं के साथ चित्रण किया है। गौण पात्रों में मंगल के पिता, शबनम के पिता, फूलचंद, लाजो की माँ, बच्चन, आस्था, सुषमा और कॅप्टन अमर घई आदि का सामान्य परिचय दिया है।

चतुर्थ अध्याय : ` प्रिय शबनम ` : कथोपकथन

इसमें मैंने कथोपकथन के उपयुक्तता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, उद्देश्यपूर्णता, नाटकियता, भावात्मकता आदि गुणों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत उपन्यास के कथोपकथन का सोदाहरण विवेचन किया है।

पंचम अध्याय : ` प्रिय शबनम ` : वातावरण

इस अध्याय में मैंने ` प्रिय शबनम ` उपन्यास के दो प्रकारके वातावरणों का चित्रण किया है - बाहरी तथा मानसिक वातावरण। बाहरी वातावरण के अन्तर्गत महानगरीय आवास, यातायात, होटल क्लब संस्कृति, अर्थ केन्द्रित रिश्ते, मध्यवर्गीय पारिवारिक, क्लब का पार्टी का तथा प्रकृति आदि का वातावरण सोदाहरण स्पष्ट किया है। मानसिक वातावरण में काल्पनिकता, कुण्ठाग्रस्तता, विधामन:स्थिति, नारी स्वच्छन्दता, भावना आदि का सोदाहरण चित्रण किया है।

षष्ट अध्याय : ` प्रिय शबनम ` : भाषा-शैली

भाषा के अन्तर्गत मैंने शब्द प्रयोग के विविध रूप, भाषा सौन्दर्य के विविध साधन, शब्दशक्तियाँ, प्रतीक, मुहावरे, वाक्य-विन्यास, बिम्ब, कहावतें, सूक्तियाँ आदि को ध्यान में रखकर ` प्रिय शबनम ` की भाषा का सोदाहरण स्पष्टीकरण किया है। पत्रशैली के साथ-साथ अन्य शैलियों को ध्यान में रखकर इस उपन्यास का शैलीगत अनुशीलन किया है। इसमें विश्लेषणात्मक, व्यंगात्मक, दृश्य, प्रतीकात्मक, निराधार प्रत्यक्षीकरण, आत्मकथात्मक, पूर्व-दीप्ति,

नाटय, संवाद, समय-विपर्यय, सांकेतिक आदि शैलियों का साधार अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

सप्तम अध्याय : ` प्रिय शबनम ` : उद्देश्य -

` प्रिय शबनम ` के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुये विद्वानों के कुछ अभिप्राय प्रस्तुत किये हैं । उद्देश्य के अन्तर्गत स्त्री-पुरूष, कुण्ठाग्रस्त व्यक्ति का मनोद्घाटन , महानगरीय समस्याओं का चित्रण, मार्क्सवादी वैचारिकता, मोह का क्षण, वर्गगत चित्रण, प्रकृति चित्रण आदि शीर्षक को के अन्तर्गत लेखक के उद्देश्य को स्पष्ट करने का मैंने प्रयत्न किया है। उपन्यासकार के सन्देश तथा मैंने अपने अध्ययन की सीमा से सन्देश कोपाठक कों के सामने रखा है ।

उपसंहार --

इस शीर्षक के अन्तर्गत ` प्रिय शबनम ` के अनुशीलन के निष्कर्षों की प्रस्तुति की है । तथा अनुसन्धान की नयी दिशा की ओर संकेत किया है ।

सन्दर्भ गंथ-सूची

प्रबन्ध के अन्त में सन्दर्भ गंथसूची दी है ।

ऋण निर्देश

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित करनेवाले गुरूजनों, परिवार के सदस्यों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

यह लघु शोध-प्रबन्ध श्रध्देय गुरूवर्य डॉ.पी.एस.पाटील, एम.ए., पीएच.डी. अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है। उन्होंने अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी समय समय पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में मार्गदर्शन किया। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दों में प्रकट करना मेरे लिए संभव नहीं है।

शिवाजी विश्वविद्यालय के भुतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्रध्देय गुरूवर्य डॉ.वसंत केशव भोरे, डॉ.अर्जुन चव्हाण, डॉ.र.ग.देसाई तथा प्रा.सौ.एम. एस.जाधव ने भी मुझे इस शोध कार्य में मौलिक मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन दिया है। उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मेरे आदरणीय पूज्य पिताश्री बापू तथा मेरी माताश्री कलावती दोनों अनपढ होते हुये भी मुझे हमेशा आगे पढने में प्रेरणा देते रहे। पूज्य माता-पिता के आशीर्वाद से ही यह शोध कार्य संपन्न हुआ है। अत: मैं उनके ऋण में सदैव रहूँगा।

मेरे परिवार के अन्य सदस्य - मेरे सभी भाई - भाभी, चाचा-चाची जी तथा मेरे परिवार के सभी छोटे सदस्य - जिन्होंने मुझे प्रस्तुत कार्य में सदैव सक्रिय सहयोग एवं प्रोत्साहन दिया है। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। इन्हें मैं कभी नहीं भूल सकता।

शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर ,जयसिंगपुर महाविद्यालय,जयसिंगपुर, विवेकानंद महाविद्यालय,कोल्हापुर,मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय,सांगली आदि ग्रंथालयों के ग्रंथपालों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

इस लघुशोध-प्रबन्ध का टंकलेखन कोल्हापुर के श्री बालकृष्ण रा.सावंत ने बड़ी तत्परता के साथ एवं उत्तम रीति से पूरा किया,इसलिए मैं उनका आभारी हूँ।

इस कार्य को सम्पन्न बनाने में मेरे सहृदयों ने मेरी सहायता की है। अंत में मैं उन सबका आभार मानकर विनम्रतासे विद्वानों के सामने मैं इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर।   शोध-छात्र
दिनांक :१:६:१९९५।   (श्री सुनिल बापू बनसोडे)